शिरीष के फूल

जीवन परिचय

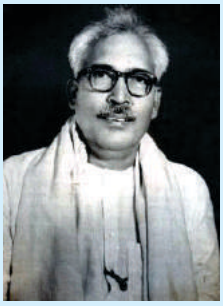

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का जन्म 19 अगस्त सन् –1907 ई. में बलिया जिले के आरत दुबे के छपरा नामक गाँव में हुआ। साहित्य और ज्योतिष पर समान अधिकार रखने वाले द्विवेदी जी बचपन से ही अध्ययनशील रहे। लखनऊ विश्वविद्यालय ने आपको डी. लिट. की उपाधि से विभूषित किया। इन्होंने ललित निबंधों की रचना की है।

अशोक के फूल, कुटज, विचार और वितर्क, विचार–प्रवाह, सूर–साहित्य, कबीर, हिंदी साहित्य का आदिकाल, बाणभट्ट की आत्मकथा, पुनर्नवा आदि इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं।

द्विवेदी जी ने अपनी रचनाओं के अनुरूप भाषा का प्रयोग किया है। उनकी भाषा के तीन रूप हैं– तत्सम प्रधान, सरल, तद्भव प्रधान और उर्दू–अंग्रेजी शब्द युक्त। व्यावहारिक भाषा को गतिशील एवं प्रवाहपूर्ण बनाने के लिए आपने लोकोक्तियों और मुहावरों का आवश्यकतानुसार प्रयोग किया है। आपकी भाषा प्रांजलता, भावप्रवणता, सुबोधता, अलंकारिता, चित्रोपमता और सजीवता के गुणों से परिपूर्ण है। आपके लेखन में व्यास, गवेषणात्मक, विवेचनात्मक, भावात्मक, आत्म–व्यंजक, लालित्यपूर्ण, आलोचनात्मक, व्यंग्यात्मक, प्रवाहमय और भावव्यंजक शैली के सभी रूप आकर्षक तथा मधुर हैं।

केंद्रीय भाव:–'शिरीष के फूल' एक उत्कृष्ट कोटि का निबंध है। लेखक ने इसमें शिरीष का विभिन्न रूपों में वर्णन किया है। शिरीष गर्मियों में फूलता है यह छायादार होने के साथ–साथ अत्यंत सुंदर भी होता है। इसका कारण यह है कि शिरीष ऐसा कालजयी अवधूत (जिसने कालरूपी समय को जीत लिया) है, जो जीवन की अजेयता का प्रचार करता है। प्राचीनकाल में इसका शृंगारिक वर्णन कालिदास ने किया है। कहीं–कहीं पर उन व्यक्तियों पर तीखा व्यंग्य किया है, जो सत्ता की अधिकार लिप्सा के कारण आने वाली पीढ़ी की उपेक्षा भी सहन कर लेते हैं।

जरा और मृत्यु ये दोनों जगत के चिर–परिचित प्रामाणिक सत्य हैं। इस सत्य को तुलसीदास ने भी स्वीकारा है।

शिरीष को अद्‌भुत अवधूत की संज्ञा भी इसीलिए दी है कि दु:ख हो या सुख वह कभी हार नहीं मानता। कबीर भी शिरीष के समान मस्त, बेपरवाह पर सरस थे। कालिदास स्थित–प्रज्ञता और विदग्ध–प्रेमी का हृदय पाने के कारण अनासक्त योगी बनकर संस्कृत के कवि सम्राट बन गए। आधुनिक काल में यही अनासक्ति सुमित्रानंदन पंत व रवीन्द्रनाथ टैगोर में है। शिरीष पक्के अवधूत की भाँति है जो चिलकती धूप में सरस बना रहता है। चाहे कैसा ही आँधी–तूफान,धूप–वर्षा या विषम परिस्थितियाँ हों, इनमें कोई स्थिर नहीं रह सकता। किंतु शिरीष रहता है। वैसे ही जैसे दंगा–फसाद, मार–काट, अग्निदाह, लूट–पाट आदि परिस्थितियों में गांधीजी ने अपना धैर्य, साहस व निर्णय नहीं खोया इसीलिए लेखक ने महात्मा गांधी को अवधूत कहा है।

जहाँ बैठ के यह लेख लिख रहा हूँ उसके आगे, पीछे, दायें, बायें, शिरीष के अनेक पेड़ हैं। जेठ की जलती धूप में, जब कि धरित्री निर्धूम–अग्निकुण्ड बनी हुई थी, शिरीष नीचे से ऊपर तक फूलों से लद गया था। कम फूल इस प्रकार की गर्मी में फूल सकने की हिम्मत करते हैं। कर्णिकार और आरग्वध (अमलतास) की बात मैं भूल नहीं रहा हूँ। वे भी आस–पास बहुत हैं, लेकिन शिरीष के साथ आरग्वध की तुलना नहीं की जा सकती। वह पंद्रह–बीस दिन के लिए फूलता है। बसंत ऋतु के पलाश की भाँति। कबीरदास को इस तरह पंद्रह दिन के लिए लहक उठना पसंद नहीं था। यह भी क्या कि दस दिन फूले और फिर खंखड़–के–खंखड़–'दिन दस फूला–फूलि के खंखड़ भवा पलाश।' ऐसे दुमदारों से तो लँडूरे भले। फूल है शिरीष। बसंत के आगमन के साथ लहक उठता है। आषाढ़ तक तो निश्चित रूप से मस्त बना रहता है। मन रम गया तो भरे भादों में भी निर्घात फूलता रहता हैं। जब उमस से प्राण उबलता रहता है और लू से हृदय सूखता रहता है एकमात्र शिरीष कालजयी अवधूत की भाँति जीवन

द्विवेदी जी आधुनिक युग के अत्यंत सम्मानित साहित्यकार हैं। ललित निबंध लेखन की नई परंपरा का सूत्रपात करने का श्रेय आपको दिया जाता है। द्विवेदी जी हिंदी साहित्य के अमर रचनाकार हैं। इनमें शास्त्रीयता और सहजता का अद्‌भुत संगम है।

की अजेयता का मंत्र प्रचार करता रहता है। यद्यपि कवियों की भाँति हर फूल-पत्तों को देखकर मुग्ध होने लायक हृदय विधाता ने नहीं दिया है। पर नितांत ठूँठ भी नहीं हूँ। शिरीष के पुष्प मेरे मानस में थोड़ा हिल्लोल ज़रूर पैदा करते हैं।

शिरीष के वृक्ष बड़े छायादार होते हैं। पुराने भारत का रईस जिन मंगल जनक वृक्षों को अपनी वृक्ष-वाटिका की चहार दीवारी के पास लगाया करता था उनमें एक शिरीष भी है। (वृहत्संहिता 55।3) अशोक, अरिष्ट, पुन्नाग और शिरीष के छायादार और घन मसृण हरीतिमा से परिवेष्ठित वृक्षवाटिका ज़रूर बड़ी मनोहर दिखती होगी। वात्स्यायन ने बताया कि वाटिका के सघन छायादार वृक्षों की छाया में ही झूला (प्रेखादोला) लगाया जाना चाहिए। यद्यपि पुराने कवि बकुल के पेड़ में ऐसी दोलाओं को लगा देखना चाहते थे, पर शिरीष भी क्या बुरा था। डाल इसकी अपेक्षाकृत कमज़ोर ज़रूर होती है, पर उसमें झूलने वालियों का वजन भी तो बहुत ज्यादा नहीं होता। कवियों की यही तो बुरी आदत है कि वजन का एकदम ख्याल नहीं करते। मैं तुंदिल नरपतियों की बात नहीं कर रहा हूँ वे चाहें तो लोहे का पेड़ बनवा लें।

शिरीष का फूल संस्कृत साहित्य में कोमल माना गया है। मेरा अनुमान है कि कालिदास ने यह बात शुरू-शुरू में प्रचार की होगी। उनका कुछ इस पुष्प पर पक्षपात था (मेरा भी है) कह गए हैं; शिरीष पुष्प केवल भौंरों के पदों का कोमल दबाव सहन कर सकता है; पक्षियों का बिल्कुल नहीं – 'पदंसहेत भ्रमरस्य पेलबं शिरीष पुष्प न पुनः पतत्रिणाम!' अब मैं इतने बड़े कवि की बात का विरोध कैसे करूँ? सिर्फ़ विरोध करने की हिम्मत न होती तो भी कुछ कम बुरा नहीं था; यहाँ तो इच्छा भी नहीं है। ख़ैर, मैं दूसरी बात कर रहा था। शिरीष के फूलों की कोमलता देखकर परवर्ती कवियों ने समझा कि उसका सब कुछ कोमल है; यह भूल है। इसके फल इतने मजबूत होते हैं कि नये फूलों के निकल आने पर भी स्थान नहीं छोड़ते। जब तक नये फल-पत्ते मिलकर धकियाकर उन्हें बाहर नहीं कर देते तब तक यह डटे रहते हैं।

बसंत के आगमन के समय जब सारी वनस्थली पुष्प-पत्र से समृद्ध होती रहती है, शिरीष के पुराने फल बुरी तरफ खड़खड़ाते रहते हैं। मुझे इनको देखकर उन नेताओं की बात याद आती है, जो किसी प्रकार जमाने का रुख नहीं पहचानते और जब नई पौध के लोग उन्हें धक्का मारकर निकाल नहीं देते तब तक जमे रहते हैं।

मैं सोचता हूँ कि पुराने की यह अधिकार-लिप्सा क्यों नहीं समय रहते सावधान हो जाती? जरा और मृत्यु ये दोनों ही जगत के अतिपरिचित और अति प्रामाणिक सत्य हैं। तुलसीदास ने अफसोस के साथ इसकी सचाई पर मुहर लगाई थीं, ''धरा को प्रमान यही तुलसी जो फरा सो झरा जो बरा-सो बताना।'' मैं शिरीष के फूलों को देखकर कहता हूँ कि क्यों नहीं फलते ही समझ लेते बाबा, कि झड़ना निश्चित है। सुनता कौन है? महाकाल देवता सपासप कोड़े चला रहे हैं, जीर्ण और दुर्बल झड़ रहे हैं, जिनमें प्राणकण थोड़ा भी उर्ध्वमुखी है, वे टिक जाते है दुरंत प्राणधारा और सर्वव्यापक कालाग्नि का संघर्ष निरन्तर चल रहा है। मूर्ख समझते हैं कि जहाँ बने हैं वहीं देर तक बने रहे तो काल देवता की आँख बचा जायेंगे। भोले हैं वे। हिलते-डुलते रहो, स्थान बदलते रहो आगे की ओर मुँह किये रहो तो कोड़े की मार से बच भी सकते हो। जमे कि मरे।

एक बार मुझे मालूम होता है कि यह शिरीष एक अद्‌भुत अवधूत है। दुःख हो या सुख, वह हार नहीं मानता। न ऊधो का लेना, न माधो का देना। जब धरती और आसमान जलते रहते हैं तब भी यह हजरत न जाने कहाँ से अपना रस खींचते रहते है। मौज में आठों याम मस्त रहते हैं। एक वनस्पति शास्त्री ने मुझे बताया है कि वह उस श्रेणी का पेड़ है जो वायु-मंडल से अपना रस खींचता है, जरूर खींचता होगा। नहीं तो भयंकर लू के समय इतने कोमल तंतुजाल और ऐसे सुकुमार केसर को कैसे उगा सकता था? अवधूतों के मुँह से ही संसार की सबसे सरस रचनाएँ निकली हैं। कबीर बहुत कुछ इस शिरीष के समान ही थे, मस्त और बेपरवाह पर सरस और मादक। कालिदास भी जरूर अनासक्त योगी रहे होगें। शिरीष के फूल फक्कड़ाना मस्ती से ही उपज सकते हैं और मेघदूत का काव्य उसी प्रकार के अनासक्त अनाविल

उन्मुक्त हृदय में उमड़ सकता है। जो कवि अनासक्त नहीं रह सका, फक्कड़ नहीं बन सका, जो किए-कराए का लेखा जोखा मिलाने में उलझ गया, वह भी क्या कवि है? कहते है कर्णाट-राज्य की प्रिया विज्जिका देवी ने गर्वपूर्वक कहा था कि एक कवि ब्रह्मा थे , दूसरे वाल्मीकि और तीसरे व्यास। एक ने वेदों को , दूसरे ने रामायण को और तीसरे ने महाभारत को दिया। इसके अतिरिक्त कोई कवि होने का दावा करे तो मैं कर्णाट राज्य की प्यारी रानी उसके सिर पर अपना बायाँ चरण रखती हूँ- ''तेषांमूर्ध्नि ददामि वामचरण कर्णाट-राजप्रिया।'' मैं जानता हूँ कि इस उपालम्भ से दुनिया का कोई कवि हारा नहीं है पर इसका मतलब यह नहीं कि कोई लजाय नहीं तो उसे डाँटा भी न जाय। मैं कहता हूँ कि कवि बनना है मेरे दोस्तों, फक्कड़ बनो शिरीष की मस्ती की ओर देखो। अनुभव ने मुझे बताया कि कोई किसी की सुनता नहीं। मरने दो।

कालिदास वजन ठीक रख सकते थे, क्योंकि वे अनासक्त योगी की स्थित-प्रज्ञता और वद-प्रेमी का हृदय पा चुके थे। कवि होने से क्या होता है? मैं भी छंद बना लेता हूँ तुक जोड़ लेता हूँ और कालिदास भी छंद बना लेते थे-तुम भी जोड़ ही सकते होंगे- इसलिए हम दोनों एक श्रेणी में नहीं हो जाते। पुराने सहृदय ने किसी ऐसे ही दावेदार को फटकारते हुए कहा था- ''**वयमपि कवयः कवयः कवयस्ते कालिदासाद्यः।**'' मैं तो मुग्ध और विस्मय-विमूढ़ होकर कालिदास के एक-एक श्लोक को देखकर हैरान हो जाता हूँ। अब इस शिरीष के फूल का ही एक उदाहरण लीजिए शकुन्तला बहुत सुन्दर थी। सुन्दर क्या होने से कोई हो जाता है? देखना चाहिए कि कितने सुन्दर हृदय से वह सौन्दर्य डुबकी लगाकर निकला है। शकुन्तला कालिदास के हृदय से निकली थी। विधाता की ओर से कोई कार्पण्य नहीं था, कवि की ओर से भी नहीं। राजा दुष्यन्त भी अच्छे भले प्रेमी थे। उन्होंने शकुन्तला का एक चित्र बनाया था लेकिन रह-रहकर उनका मन खीझ उठता था। उहूँ, कही न कहीं कुछ छूट गया है। बड़ी देर के बाद उन्हे समझ में आया कि शकुन्तला के कानों में वे उस शिरीष के पुष्प को देना भूल गये है, जिसके केसर गण्डस्थल तक लटके हुए थे और रह गया है शरदचन्द्र की किरणों के समान कोमल और शुभ्र मृणाल का हार।

कृतं न कर्णापितबन्धन सखे,
शिरीषमागण्डविलम्बिकेसरम्।
न वा शरच्चन्द्रमरीचिकोमलं
मृणालसूत्र रचितं स्तनान्तरे।।

कालिदास ने यह श्लोक न लिख दिया होता तो मै समझता कि वे भी बस और कवियों की भाँति कवि थे, सौंदर्य पर मुग्ध दुःख से अभिभूत, सुख से गद्-गद् । पर कालिदास सौंदर्य के बाह्य आवरण को भेदकर उसके भीतर तक पहुँच सकते थे, दुःख हो या सुख, वे अपना भाव रस उस अनासक्त कृषीवल की भाँति खींच लेते जो निर्दलित ईक्षु दण्ड से रस अर्क निकाल लेता है। कालिदास महान् थे, क्योंकि वे अनासक्त रह सके थे कुछ इसी श्रेणी की अनासक्ति आधुनिक हिन्दी कवि सुमित्रानंदन पंत में है। कविवर रवीन्द्रनाथ में यह अनासक्ति थी। एक जगह उन्होंने लिखा है- 'राजोद्यान का सिंह द्वार कितना ही अभ्रभेदी क्यों न हो, उसकी शिल्पकला कितनी ही सुन्दर क्यों न हो वह यह नहीं कहता कि हम में आकर ही सारा रास्ता समाप्त हो गया। असल गन्तव्य स्थान उसे अतिक्रम करने के बाद ही है। यही बताना उसका कर्तव्य है। फूल हो या पेड़ वह अपने आप में समाप्त नहीं है। वह किसी अन्य वस्तु को दिखाने के लिए उठी हुई अँगुली है यह इशारा है।

शिरीष तरू सचमुच पक्के अवधूत की भाँति मेरे मन में ऐसी अग्नि जगा देता है जो ऊपर की ओर उठती रहती है। इस चिलकती धूप में इतना सरस वह कैसे बना रहता है? क्या ये बाह्य परिवर्तन-धूप आँधी, लू-अपने आप में सत्य नहीं है? हमारे देश के ऊपर से जो यह मार काट, अग्निदाह, लूटपाट, खून खच्चर का बवंडर बह गया है उसके भीतर भी क्या स्थिर रहा जा सकता है? शिरीष रह सका है। अपने देश का एक बूढ़ा रह सका था। क्यों? मेरा मन पूछता है कि ऐसा क्यों सम्भव हुआ है? क्योंकि शिरीष भी अवधूत है और अपने देश का वह बूढ़ा अवधूत था। शिरीष वायुमण्डल से रस खींचकर इतना कोमल इतना कठोर है। गांधी भी वायुमण्डल से रस खींचकर इतना कोमल और इतना कठोर हो सका था। मै जब-जब शिरीष की ओर देखता हूँ, तब-तब हूक उठती है-हाय, वह अवधूत कहाँ हैं।

अभ्यास

अति लघु-उत्तरीय प्रश्न

1. शिरीष किस ऋतु में फूलता है?
2. शिरीष की तुलना किससे की गई है?
3. शिरीष अपना पोषण कहाँ से प्राप्त करता है?

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. शिरीष निर्घात फूलता रहता है लेखक ने ऐसा क्यों कहा है?
2. किन परिस्थितियों में शिरीष जीवन जीता है?
3. लेखक ने शिरीष के फूल की तुलना किससे की है और क्यों ? लेखक के अनुरूप शिरीष के फूलों की क्या प्रकृति है?
4. शिरीष के फूलों के सन्दर्भ में तुलसीदास जी के क्या कथन हैं?
5. लेखक ने शिरीष के सन्दर्भ में किन-किन विद्वानों के नाम बताएँ हैं?
6. शिरीष और अमलतास में क्या अन्तर है?

दीर्घ-उत्तरीय प्रश्न

1. ''जरा और मृत्यु ये दोनों ही जगत के अति परिचित और अति प्रामाणिक सत्य हैं।'' इस वाक्य पर अपने भाव अभिव्यक्त कीजिए।
2. लेखक ने कबीर की तुलना शिरीष से क्यों की है? समझाइए।
3. कालिदास को अनासक्त योगी क्यों कहा गया है? स्पष्ट कीजिए।
4. शिरीष एक अद्भुत अवधूत है। दु:ख हो या सुख, वह हार नहीं मानता। इस वाक्य के सन्दर्भ में अपने भाव लिखिए।
5. शिरीष जीवन में किस गुण का प्रचार करता है?

भाषा अध्ययन

1. निम्नलिखित मुहावरों और लोकोक्तियों को अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए-

   डटे रहना, आँख बचाना, हार न मानना, आँच न आना, न ऊधो का लेना न माधो का देना,

2. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध कीजिए-

   अ. महक उठता है शिरीष का फूल बसन्त के आगमन के साथ।

   आ. हिल्लोल जरूर पैदा करते हैं शिरीष के पुष्प मेरे मानस में ।

   इ. छायादार हैं होते बड़े वृक्ष शिरीष के ।

   ई. शिरीष का फूल साहित्य में कोमल मानी जाती है।

3. निम्नलिखित गद्यांश में यथा स्थान विराम चिह्नों का प्रयोग कीजिए–

मैं सोचता हूँ कि पुराने की यह अधिकार लिप्सा क्यों नहीं समय रहते सावधान हो जाती जरा और मुत्यु ये दोनों ही जगत के प्रति परिचित और अति प्रामाणिक सत्य हैं तुलसीदास ने अफसोस के साथ इसकी गहराई पर मुहर लगाई थी धरा को प्रमान यही तुलसी जो फरा सो झरा जो बरा सो बताना

योग्यता विस्तार

1. आपके आस–पास शिरीष जैसा कोई वृक्ष हो तो उसके बारे में अपने विचार व्यक्त कीजिए।
2. यदि आपका शिरीष के समान गुण वाले किसी महान व्यक्ति से परिचय हो तो उसके विषय में लिखिए।
3. यदि आपके जीवन में कभी प्रतिकूल परिस्थितियाँ आएँ तो आप क्या करेगें? बताइए।

शब्दार्थ

शिरीष – अति कोमल फूलों वाला एक वृक्ष, **कृषीवल**– गन्ने में लगने वाला कीट **धरित्री** – धरती, **अभ्रभेदी**– आकाश को भेदने वाला, **निर्धूम** – धुआँ रहित, शुभ्र **मृणाल**– सफेद कमल की डंडी, **अवधूत** – सुख दुख को समान भाव से लेने वाला/ संन्यासी /योगी, **कालजयी** – जिसने काल को जीत लिया हो, **निर्दलित** – बिना दबाए **कर्णिकार** – कनक चंपा का वृक्ष, **निर्घात** – आघात, प्रहार, तेज हवा से उत्पन शब्द, **परिवेष्ठित** – घिरी हुई, **अरिष्ट** – रीठा, **पुन्नाग** – एक बड़ा सदाबहार वृक्ष, **मसृण** – चिकनी, हरीतिमा, हरियाली, **तुन्दिल** – तोंद वाले, **पक्षपात** – तरफदारी, किसी का पक्ष लेना **परवर्ती**– बाद के **अनाविल** – स्वच्छ **ऊर्ध्वमुखी** – ऊपर की ओर मुख **तंतुजाल** –रेशों का जाल **कार्पण्य** – कंजूसी, **ईक्षुदण्ड** – गन्ना, स्थित प्रज्ञ = स्थिरबुद्धि

***